

मई मास का द्वितीय पाक्षिक निवेदन-

“त्रिगुण-विज्ञान”(१)

पंक्ति संख्या

प्रकृति के तीन गुण विख्यात हैं - सत्, रज तथा तम्। इन गुणों के भली प्रकार ज्ञान को भगवान् सब ज्ञानों में सर्वोत्तम बताते हैं (गीता - १४/१)। उनका आश्वासन है कि इस ज्ञान के आलम्बन से मनुष्य भगवान् के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है (गीता - १४/२)।

२. सत्त्वगुण से मन में ज्ञान और सुख उपजते हैं। रजोगुण से स्वार्थमय कर्मों में प्रवृत्ति तथा तमोगुण से प्रमाद (व्यर्थ चेष्टा), आलस्य (कर्तव्य की उपेक्षा) तथा निद्रा (निष्क्रियता) उपजते हैं। ५

३. तीनों गुणों के उपरोक्त प्रभावों से **सुख लेने की आशा ही बन्धनकारी है। भगवत्सेवा में इनका उपयोग मात्र करना बन्धनकारी नहीं है।**

४. मनुष्य में ये तीनों गुण साथ-साथ रहते हैं, किन्तु जब एक गुण बढ़ता है तब शेष दो गुण दब जाते हैं। दबे हुए गुण बढ़े हुए गुण के सहायक बन जाते हैं। यथा - **सत् के बढ़ने पर** रजोगुण से कर्म परहित में होते हैं और तमोगुण से विश्राम मिलता है। **रजोगुण के बढ़ने पर** सत्त्वगुण से व्यक्तिगत आर्थिक-लाभ, सम्मान-प्राप्ति एवं काम-सुखकी आशा मिलती है और तमोगुण इन क्षण-भंगुर सुखों के प्राप्त होने पर प्रमाद, आलस्य और निद्रा की प्रेरणा देता है। **तमोगुण के बढ़ने पर** अपने द्वारा किये गए पाप को रोकने और पुण्य करने की ओर चेष्टा न होकर निष्क्रियता होती है। १०

५. सत्त्वगुण की वृद्धि से पुण्य होते हैं। रजोगुण की वृद्धि से पाप होते हैं और तमोगुण से निष्क्रियता और मोह होते हैं। (गीता - १४/१७)। १५

६. मन में इन गुणों के बढ़ाने में १० तत्त्व सहायक होते हैं। इन में से ५ पूर्वकृत कर्मोंसे बने प्रारब्ध से प्राप्त होते हैं किन्तु पाँच तत्त्व मनुष्य वर्तमान जन्म में स्वेच्छा से चेष्टा द्वारा अर्जित करता है। इसके अन्तर्गत **शास्त्र-अध्ययन, निवास स्थान का चयन, कर्म, ध्यान तथा मन्त्र-जप के लिए चेष्टा होती है** (गीता जीवन-विज्ञान में १४/१० की टीका)।

७. **सत्त्वगुण** की अधिकता से चित्त में उत्साह एवं प्रफुल्लता बढ़ते हैं। सर्वोपयोगी कर्म में न मन ऊबता है और न थकान होती है। इन्द्रियां चेतनता व प्रकाश से भरी रहती हैं। **रजोगुण** का फल क्षणभंगुर सुख की प्रतीति एवं अन्ततः दुःख है। **तमोगुण** की अधिकता से आलस्य के कारण कर्तव्य कर्मों की उपेक्षा व टालमटोल होते हैं। जैसे, मनोरंजन के लिए ताश खेलना, टी.वी व सिनेमा में चलचित्र देखने में समय का नष्ट करना, गपशप में समय बिताना आदि प्रमादों में मन लगा रहता है। मद्यपान व जुए आदि व्यसनों की लत पड़ जाती है। सब प्रकार के उपयोगी कर्मों में विपरीत भाव रहता है। २०

८. **सत्त्वगुण** की अधिकता रहने पर वर्तमान जीवन आनन्दपूर्वक चलता है और मरणोपरान्त सुखकर देवयोनियों की प्राप्ति होती है। **रजोगुण** की अधिकता से वर्तमान जीवन दुःखी व आशंकित रहता है और मरणोपरान्त उससे अधिक दुःखी जन्म की प्राप्ति होती है, यथा - अभाव ग्रस्त परिवार, शारीरिक अंगों में हीनता व दुर्बलता आदि। **तमोगुण** की अधिकता होने पर वर्तमान जीवन में विषाद, हताशा आदि होते हैं तथा मरणोपरान्त पशु व कीट, पतंगों आदि की योनियों की प्राप्ति होती है। ३०